प्रातःक्लास 28/4/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। यह स्कूल पाठशाला है। किसकी पाठशाला है? आत्माओं की पाठशाला है। यह तो ज़रूर है आत्मा शरीर बिगर कुछ सुन नहीं सकती है। जब कहा जाता है आत्माओं की पाठशाला तो समझना चाहिए आत्मा शरीर बिगर तो समझ नहीं सकती। फिर कहना पड़ता है जीवात्मा। अभी जीवात्माओं की पाठशाला तो सभी है; इसलिए कहा जाता है यह आत्माओं की पाठशाला और परमपिता परमात्मा आकर पढ़ाते हैं। वह है जिस्मानी पढ़ाई, यह है रूहानी पढ़ाई जो कि बेहद का बाप आकर पढ़ाते हैं। तो यह हो गई गॉड फादरली यूनिवर्सिटी। भगवानुवाच है ना। यह भक्ति मार्ग नहीं है। यह पढ़ाई है। स्कूल में पढ़ते हैं, वह कोई भक्ति है क्या? भक्ति मन्दिर टिकाणे आदि में होती है। पाठशाला में होती है पढ़ाई। यह पाठशाला है। कौन पढ़ाते हैं? भगवानुवाच। और कोई पाठशाला में भगवानुवाच नहीं कहा जाता। सिर्फ़ यह एक ही जगह है जहां भगवानुवाच है। ऊँच ते ऊँच भगवान को ही ज्ञान का सागर कहा जाता है। वही ज्ञान दे सकते हैं। बाकी तो जो सभी भक्तिमार्ग में है वह है भक्ति। भक्ति के लिए बाप ने समझाया है भक्ति दुर्गति है। फिर मुझे आकर पढ़ाकर सद्गति देनी पड़ती है। गाया जाता है सर्व का सद्गति दाता एक परमात्मा। क्या पढ़ाते हैं? आकर राजयोग पढ़ाते हैं। आत्मा सुनती है शरीर द्वारा। और कोई कॉलेज में भगवानुवाच है नहीं। भारत ही है जहां शिव जयन्ति मनाई जाती है। भगवान तो निराकार है फिर शिव जयन्ति कैसे ब(म)नाते हैं? जयन्ति तब होती है जब शरीर में प्रवेश करते हैं। बाप कहते हैं मैं तो गर्भ में कभी भी प्रवेश नहीं करता हूँ। तुम सभी गर्भ में प्रवेश करते हो। 84 जन्म लेते हो। सबसे 84 जन्म जास्ती यह ल.ना. लेते हैं। 84 जन्म लेकर फिर सांवरा गांवरे का छोड़ा बनते हैं। ल.ना. कहो वा राधे–कृष्ण कहो। राधे–कृष्ण हैं बचपन में। वह जब जन्म लेते हैं तो स्वर्ग़ में लेते हैं जिसको वैकुण्ठ कहा जाता है। पहला नम्बर जन्म इनका है तो 84 जन्म भी यह लेते हैं। श्याम–सुन्दर। सुन्दर फिर सो श्याम। कृष्ण सभी को प्यारा लगता है। कृष्ण का जन्म तो होता ही है नई दुनियां में। फिर पुनर्जन्म लेते–2 आकर पुरानी दुनियां में पड़ते हैं। पतित बन जाते हैं। फिर पतित सो पावन। पतित श्याम , पावन सुन्दर। ज्ञान चिक्षा पर बैठने से पावन बनते हैं। काम चिक्षा पर पतित। बाप समझाते हैं इस समय सभी काम चिक्षा पर बैठ काले हो गये हो। काम चिक्षा पर जलने से काले हो जाते हैं। इनको कहा जाता है काम अग्नि जिसमें जलते हैं। जलते–2 श्याम हो जाते हैं। फिर सुन्दर बनना है। यह खेल ही ऐसा है। भारत पहले–2 है सतोप्रधान। सुन्दर। अभी काला हो गया है। बाप कहते हैं इतने सभी आत्माएं मेरे बच्चे हैं। 5–7 करोड़ आत्माएं सभी काम चिक्षा पर बैठ जलकर काले हो गये हैं। मैं आकर सभी को वापस ले जाता हूँ। यह सृष्टि का चक्र ही ऐसा है फूलों का बग़ीचा सो फिर कांटों का जंगल बन जाता है। जंगल को बगीचा नही कहा जाता। जंगल में जनावर जैसे एप्स रहते हैं। बाप समझाते हैं तुम बच्चे कितने सुंदर, विश्व के मालिक थे। अभी फिर बन रहे हो। यह (ल.ना.) विश्व के मालिक थे ना। यह 84 जन्म भोग अभी फिर ऐसे बन रहे हैं अर्थात् इन्हों की आत्मा। आत्मा अभी पढ़ रही है। यह भक्ति नहीं है। भक्ति से तो पूरी दुर्गति होती है। तुमने सबसे जास्ती भक्ति की है। तो दुर्गति भी तुम्हारी हुई है। शुरू में भक्ति तुम्हीं करते हो। देवताएं वाममार्ग में जाते हैं। वाममार्ग कहा जाता है विकारी मार्ग को। इतने जन्म पवित्र मार्ग में थे, इतने जन्म अपवित्र। तुम पवित्र प्रवृत्ति मार्ग वाले। सन्यासी हैं निवृत्ति मार्ग वाले। वह कब राजयोग सिखा नहीं सकते। वह सुख को काग विष्टा समान समझते हैं। तुम कहते हो इस सुख है मनुष्यों को काग विष्टा समान। अल्पकाल क्षण भंगुर। सतयुग में तो तुमको इतना अपार सुख है जो बाप को याद करने की दरकार ही नहीं। गायन भी है ना दुःख में सुमिरण सब करे.....किसका? ...बाप का। इतने सभी को थोड़े ही सुमिरण करना है। देवताएं तो कितने ढेर हैं। भक्ति मार्ग में कितने का सुमिरण करते हैं। जानते कुछ भी नहीं। कृष्ण कब आया, वह कौन है कुछ भी पता नहीं। कृष्ण और ना. में भी भेद क्या है यह भी कोई नहीं जानते। शिवबाबा है ऊँच ते ऊँच। फिर उनके नीचे ब्रह्मा–विष्णु–शंकर। उनको

देवता कहा जाता है। यहां के जंगली लोग तो सभी को भगवान कह देते हैं। सर्वव्यापी कह देते हैं। बाप कहते हैं सर्वव्यापी तो माया 5 विकार है। एक–2 के अन्दर। सतयुग में कोई में विकार होता नहीं। मुक्तिधाम में भी आत्माएं पवित्र रहती हैं। अपवित्रता की कोई बात नहीं। तो यह रचयिता ही आकर अपना भी परिचय देते हैं। रचना के आदि, मध्य, अंत का राज़ भी समझाते हैं अर्थात् आस्तिक बनाते हैं। बाकी दुनिया में तो सभी हैं नास्तिक। तुम एक ही बार आस्तिक बनते हो। यह तुम्हारा जीवन देवताओं से भी उत्तम है। गाया भी जाता है मनुष्य जीवन दुर्लभ है हीरे जैसा। अभी कौड़ी जैसा, हीरे जैसा क्या होता है यह भी तुम जानते हो। कलयुग के अंत में है कौड़ी जैसा। और फिर पुरुषोत्तम संगमयुग पर हीरे जैसा जीवन बनता है। इनको (ल.ना.) को हीरे जैसा नहीं कहेंगे। तुम्हारा हीरे जैसा है। तुम हो ईश्वरीय संतान। यहां तुम कहते हो हम ईश्वर के संतान हैं। यह दैवी संतान। यहां तुम कहते हो हम ईश्वरीय संतान हैं। ईश्वर हमारा बाप है। वह हमको पढ़ाते हैं; क्योंकि ज्ञान सागर है ना। राजयोग सिखलाते हैं। गीता में जो भगवानुवाच है, वह रॉंग है। गीता को बिल्कुल ही खण्डन कर दिया है। उनमें नाम होना चाहिए बाप का। इसके बदली नाम दे दिया है जिस पतित को पावन बनाते हैं उनका नाम डाल दिया है। कृष्ण की आत्मा के लिए कहेंगे। कृष्ण तो सतयुग में था। फिर तो उनका नाम–रूप सभी बदल जाता है। उन्होंने नाम कृष्ण भगवान लिख दिया है। वास्तव में कृष्ण तो होता है वैकुण्ठ में। वहां यह राज्य कहां से लाया? यह तो सभी नई बातें हैं ना। यह ज्ञान एक ही बार मनुष्यों को मिलता है। जो पास्ट हुआ द्वापर से कलयुग तक, वह भी भक्ति। ज्ञान तो तुमको एक ही बार मिलता है पुरुषोत्तम संगमयुग पर। यह है उत्तम ते उत्तम बनने का युग। कलयुग और सतयुग के बीच। जिसको दुनियां में कोई भी नहीं जानते। सभी जैसे सभी कुम्भकरण के नींद में सोये पड़े हैं। कब्रदाख़िल हैं ना। सभी का विनाश खड़ा है; इसलिए अभी तुम बच्चों को कोई से भी सम्बन्ध रखना न चाहिए। गीत भी है ना। अंतकाल जो स्त्री सिमरे .....अंत काल शिवबाबा को सुमिरे तो नारायण जूं वल वल अवतरे राजाई कुल में। सिवाय भगवान के और कोई को याद किया तो वल वल मनुष्य जूं में अवतरे। यह सीढ़ी बहुत अच्छा समझने की। हम कैसे 84 जन्म लेते हैं। सीढ़ी में लगा हुआ है। हम सो देवता, फिर हम सो क्षत्रिय, हम सो वैश्य, शूद्र। अक्षर है ना। यह है निशानी। यह रावण राज्य है ना। इनको शैतानी राज्य भी कहा जाता है। शास्त्र सिखलाने वाले दुर्गति को ही पाते हैं। कितने ढेर के ढेर गुरू हैं। जबकि कहते हैं पति ही गुरू है। फिर पति को छोड़ निवृत्ति मार्ग वाले सन्यासियों को क्यों अपना गुरू बनातें हैं? निवृत्ति मार्ग वाले सन्यासी जो अपनी स्त्री को छोड़कर विधवा बना देते हैं, बच्चों को आरफन बना देते, ऐसे को फिर गुरू बनाने से क्या फायदा होगा? उनसे तुमको दीक्षा लेनी होगी। कफ्नी पहन माथा मूड़ाकर सन्यासी बनो तब ही फॉलोवर्स कहा जाये। कहलावे सन्यासी का फॉलोवर और रहे गृहस्थ में तो फिर फॉलोवर कैसे ठहरे? यह सभी है नॉनसेन्स। कुछ भी अक़्ल नहीं है। बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि हैं। तो क्या यह गुरू लोग तुमको पारस बुद्धि बनावेंगे! वह तो प्रवृत्ति मार्ग को मानते ही नहीं। इनका धर्म ही अलग है। अपना आदि सनातन देवी–देवता धर्म भूल और–2 धर्मों में फंस पड़े हैं। नाम कह देते हिन्दु धर्म। हिन्दु धर्म तो है नहीं। यह तो हिन्दुस्तान का नाम है; परन्तु इतने पत्थर बुद्धि, बन्दर बुद्धि बन गये हैं जो कुछ भी समझते नहीं। रावण बुद्धि भी कह सकते हैं। यह कौन कहते हैं भगवानुवाच। भगवान कहते हैं कि यह सभी जंगली जनावर बन्दर बन गये हैं। अभी हमने इन बन्दरों की सेना ली है। यह सारी दुनियां लंका है रावण की। रावण राज्य है ना। बाकी सोने की लंका कोई थी नहीं। रावण राज्य शुरू होता है द्वापर से। जब रजोगुणी होता है। बाकी तो सभी हैं भक्ति मार्ग के गपोड़े। बाप समझाते हैं तुम कितने गपोड़ा सुनते आये हो। कहते हैं कल्प लाखों वर्ष का है। मनुष्य 84 लाख जन्म लेते हैं। बाप कहते हैं अपने से भी जास्ती मेरी ग्लानी करते हैं। अपने लिए तो 84 लाख जन्म कहते, मुझे

तो कण–2 पत्थर–ठिक्कर में कह देते। ऐसे कहने वाले अपकारी मेरी निन्दा करने वाले जो हैं उन पर भी हम उपकार करता हूँ। बाप कहते हैं इसमें तुम्हारा दोष नहीं है। यह तो ड्रामा का खेल है। इस खेल को समझना है। सतयुग आदि से कलयुग अंत तक यह ड्रामा है। यह चक्र फिरता ही रहता है। यह सिवाय बाप के और कोई समझा न सके। वह बाप है सभी आत्माओं का पिता। वह आकर शरीर में प्रवेश करते हैं। तुम सभी ब्रह्माकुमार–कुमारियां हो। तुम ब्राह्मण हो ईश्वरीय संतान। तुम ईश्वरीय परिवार में बैठे हो। सतयुग में होगा दैवी परिवार। इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर है ईश्वरीय परिवार। बाप सम्भालते भी हैं। पढ़ाते हैं। फिर गुल–2 बनाकर साथ में ले जावेंगे। डर्टी ब्रूट्स से देवता बनाते हैं। डर्टी ब्रूट को असुर, डेविल कहा जाता है। यह सभी है आसुरी सम्प्रदाय। सतयुग में होते हैं दैवी सम्प्रदाय। कलयुग में हैं आसुरी सम्प्रदाय। फिर बाप आकर आसुरी से दैवी सम्प्रदाय बनाते हैं। तुम पढ़ते हो मनुष्य से देवता बनने। ग्रंथ में भी है ना मनुष्य से देवता करत करत न (ल)ागे वार; इसलिए इनको जादूगर कहा जाता है। नर्क को स्वर्ग बनाना जादू का खेल है ना। स्वर्ग को नर्क बनने में 84 जन्म, फिर नर्क से स्वर्ग़ बनने में सेकण्ड लगता है। एक सेकण्ड में जीवन मुक्ति। मैं आत्मा हूँ। आत्मा को भी जान लिया। बाप को भी जान लिया। और कोई यह भी नहीं जानते कि आत्मा क्या चीज़ है। तुम 100% देवता बुद्धि थे। फिर 100% डिफर बुद्धि, पत्थर बुद्धि बन गये हो। भगवानुवाचः इन सन्यासियों आदि जिनको पूजते हैं सभी हिरण्यकश्यिपु जैसे डिफर बुद्धि हैं। तुमको भी डिफर बुद्धि बना दिया है। अनेक गुरू हैं ना। सदगुरू एक ही होता है। कहते भी हैं सतगुरू अकाल। परमपिता परमात्मा एक ही गुरू है; परन्तु गुरू कितने ढेर हो पड़े हैं। सभी विकारी। निर्विकारी कोई है नहीं। कहेंगे सन्यासी हैं नहीं। जन्म तो फिर भी विकार से, भ्रष्टाचार से होता है। सतयुग में रावण राज्य, 5 विकार होते ही नहीं। उन्हों को कहा ही जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। इन देवताएं(ओं) के सिवाय और कोई को सम्पूर्ण निर्विकारी नहीं कहा जाता। अभी राजधानी स्थापन हो (र)ही है। तुम बच्चे यहां राजाई पढ़ते हो। राजयोगी हो। तुम हो राजयोगी, बेहद के सन्यासी। वह है हठयोगी (ह)द के सन्यासी। पहले उन्हों में भी ताकत थी। अभी नहीं है। अभी तो जंगल में रह नहीं सकते। सभी (अ)न्दर घुस पड़े हैं। विधवा, आरफन बनाने वाले सन्यासियों को(के) फिर भी जाकर चेले बनते हैं। उनके पांव धोकर पीते हैं। उनको भगवान , गुरू समझकर पूजते हैं। कहां सदगुरू एक जो सर्व की सद्गति करने वाला, कहां यह अनेक गुरू। यह तो तुम्हारी दुर्गति करते हैं। हम सभी को सद्गति कर सुखी बनाते हैं। मुझे ही कहते हैं सदगुरू अकाल। हम घड़ी शरीर छोड़ते लेते नहीं। काल नहीं खाता। तुम्हारी भी आत्मा तो अविनाशी है; परन्तु पतित–पावन बनते हैं। सन्यासी लोग तो कहते आत्मा निर्लेप है। ऐसी–2 बातें गुरू लोग ने बता दिया है। दुर्गति तरफ ले जाते हैं। अनेक प्रकार के गुरू हैं। खुद कहते हैं हमने 12 गुरू किये हैं। वह सभी हैं निवृत्ति मार्ग वाले। ड्रामा (का) राज़ भी बाप ने बता दिया है। रचयिता की रचना के आदि, मध्य, अंत को(का) नॉलेज देते हैं। कोई भी मनुष्य समझा न सके। ज्ञान का सागर वही बाप है। वही तुमको मनुष्य से देवता, डबल सिरताज बनाते हैं। तुम्हारा जन्म कौड़ी जैसा था। अभी तुम हीरे जैसा बन रहे हो। बाप ने मंत्र का भी अर्थ समझाया है। वह कह देते आत्मा सो परमात्मा। परमात्मा सो आत्मा। हम सो हम। बाप कहते हैं यह भी जंगलीपना है। हम आत्मा सो परमात्मा फिर कैसे बन सकते हैं? बाप तुमको समझाते हैं हम आत्मा इस समय सो ब्राह्मण बन रहे हैं। फिर हम आत्मा ब्राहमण से देवता बनेंगे। फिर सो क्षत्रिय .....फिर शूद्र से ब्राह्मण बनेंगे। सबसे ऊँचा जन्म तुम्हारा है। यह है ईश्वरीय घर। तुम किसके पास बैठे हो? मात–पिता। सभी भाई–2 हैं। बाप आत्माओं को शिक्षा देते हैं। तुम सभी हमारे बच्चे हो। वर्से के हकदार हो। अज्ञान काल में कन्या को वर्सा नहीं मिलता है। यहां तुम सभी आत्माएं बच्चे हो; इसलिए परमात्मा बाप से हर एक वर्सा ले सकते हो। बूढ़े, छोटे, बड़े सभी को हक है बाप से वर्सा लेने का; इसलिए बच्चों को भी सिखलाओ, समझाओ अपन को आत्मा समझ बाप

बाप को याद करो। तो पाप कटते जावेंगे। भक्ति मार्ग वाले इन बातों को कुछ भी समझ न सके। वह जैसे ईडियट कांटा बैठा है। यह भी बच्चों को समझाया द्वापर से ही रावण राज्य शुरू होता है। जब वाममार्ग में जाते हैं। वही निर्विकारी सो फिर भी विकारी बनते हैं। देवताएं ही फिर फिर विकार में जाते हैं। उनकी निशानियां भी जगन्नाथ मन्दिर में हैं। वह वाममार्ग के चित्र है। उनको देख पतित मनुष्य कहते हैं देवताएं तो विकार में जाते हैं ना। निशानियां हैं भल, पर इसका अर्थ नहीं समझते हैं। वही देवताएं वाममार्ग में जाने से विकारी बनते हैं। ऐसे बहुत जगह छी–2 चित्र रखे हैं। कल तुम भक्ति करते थे, आज नहीं करते हो। अभी तो बाप से वर्सा लेना है। रावण से आधा कल्प श्राप मिला है। पुनर्जन्म लेते–2 यह हाल हुआ है। भारत ही श्रापित हो गया है। रावण श्राप, राम वर्सा। यह खेल ही है समय और वर्से का। रावण राज्य में तुम सीढ़ी गिरते हो। राम आकर फिर तुमको वर देते हैं देवता बनने की(का)। रावण राज्य औ(र) राम राज्य। रावण राज्य को घोर–अंधियारा राज्य कहा जाता है। राम राज्य को घोर सोझरा राज्य कहा जाता है; इसलिए शिवरात्रि कहते हैं और कृष्ण की जयन्ति कहा जाता है। कृष्ण की जयन्ति होती है तो वेला लेते हैं। शिवरात्रि है, कोई जानते भी नहीं। बाप कहते हैं घोर अंधियारा अर्थात् द्वापर से रावण राज्य शुरू होता है। फिर घोर अंधियारे में मैं आता हूँ घोर सोझरा करने। अज्ञान अंधेर विनाश .....भक्तिमार्ग में दर–2 भटकने का कितना होता है। गीता की रिज़ल्ट कुछ भी नहीं दिखाई है। पिछाड़ी चार पाण्डव आदि पहाड़ में गल गये। प्रलय हो गई। यह सभी हैं मनुष्यों की बनाई हुई भक्तिमार्ग के शास्त्र। मैं तुमको इन सभी वेदों शास्त्रों का सार समझाता हूँ। यह हैं दुर्गति में ले जाने के शास्त्र। सभी झूठ है। झूठी माया.....5 विकार ही झूठा बनाते हैं। तुम्हारी आत्मा भी झूठी बन जाती है। साधु–संत आदि कुछ भी कहेंगे झूठ ही बोलेंगे। सत्य बतलाने वाला सदगुरू एक ही है। बाकी सभी हैं झूठ। सदगुरू आधा कल्प लिए राज्य देकर जाते हैं। झूठे गुरू सभी गंवाय देते हैं। फिर ऐसा गुरू करने से फायदा ही क्या? एक को याद करना चाहिए ना। भक्तिमार्ग में गाते भी हैं आप आवेंगे तो हम सभी को त्याग कर एक आपके बनेंगे। तो अभी बाप मिला है तो और किसको भी याद न करो। अपन को आत्मा (समझ) मुझ बाप को याद करो तो पाप कट जावेंगे। मूल बात है याद की। अंत काल शरीर या और कोई सम्बन्धी, धन–दौलत आदि याद आता है तो फिर पुनर्जन्म लेना पड़ेगा। काशी करवट भी बनारस में जाकर खाते हैं ना। अभी वह बन्द कर दिया है। तुमने भी काशी करवट खाया है ना। शिवबाबा के बने हो तो भक्तिमार्ग में भी समझते हैं हम शिवबाबा के बनें ; इसलिए काशी करवट दिखाई है। भक्तिमार्ग ऐसे जब काशी करवट खाकर शरीर छोड़ते हैं तो उनके सभी पाप कट जाते हैं। भोगना भोग लेते हैं। पापों का खाता चुक्तू हो जाता है सज़ा खाकर। फिर भी वापस कोई नहीं जाता; क्योंकि यह ड्रामा है। वापस कोई जा नहीं सकते। भल क्या भी करें। न मोक्ष को पा सकते हैं, न वापस ही जा सकते। कायदा ही नहीं। जब ड्रामा का चक्र पूरा होता है तब मैं आता हूँ। जब ऊपर से सभी आवेंगे तब मैं आता हूँ। जब ऊपर से सभी आ जावेंगे तब विनाश होगा। फिर मैं भी जाऊँगा। तुम भी जावेंगे। बाकी पहाड़ पर पाण्डव गल मरे ऐसी बात नहीं है। वह तो आपघात हो जाये। तो बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। सन्यासी, साधुओं आदि के संग में बिल्कुल ही तमोप्रधान बन पड़े हैं। गुरूओं को याद करते रहते। पतित मनुष्य पतित गुरू को ही याद करेंगे तो क्या होगा? पतित, पतित को दान करेंगे तो क्या होगा? पतित ही बनते जाते हैं। पावन कोई बन न सके। सर्व की सद्गति दाता एक ही है। फिर सर्व की दुर्गति दाता है अनेक। स्त्री का पति भी कहते गुरू है, स्त्रियां निवृत्ति मार्ग वाले सन्यासियों को क्यों गुरू करती हैं? घोर–अंधियारा है ना; इसलिए भगवानुवाच है मैं आता हूँ। जिनका साधु नाम है उनका भी मुझे उद्धार करना होता है। इस समय सारी दुनियां ही पतित है। सभी का उद्धार करना पड़ता है। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। नमस्ते।